नियम के द्वारा उपभोक्ता के व्यवहार के अध्ययन में सहायता मिलती है। प्रो० मार्शल के अनुसार उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए सम सीमांत उपयोगिता नियम का सहारा लेता है।

(2) मूल्य निर्धारण का आधार (Price Determination) →

वस्तुओं के मूल्य निर्धारण में भी सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम का सहारा लिया जाता है। उपभोक्ता के लिए जिस वस्तु की सीमांत उपयोगिता अधिक होगी, उस वस्तु का मूल्य भी अधिक होगा। दूसरी ओर जिस वस्तु की सीमांत उपयोगिता कम होगी, उसका मूल्य भी कम होगा।

(3) माँग के नियम का आधार! — Law of Demand) →

माँग का नियम भी इस नियम पर आधारित है। जिस वस्तु की सीमांत उपयोगिता अधिक होगी उसकी माँग अधिक होगी फलतः मूल्य भी अधिक होगा। वस्तु की उपयोगिता कम होने पर उसकी माँग में कमी होगी और वस्तु का मूल्य घटेगा।

(4) कर संबंधी नीति निर्धारण में (Tax Policy Determination) →

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम द्वारा कर संबंधी नीति के निर्धारण में सहायता मिलती है। इस नियम के अनुसार जैसे-जैसे किसी व्यक्ति के पास मुद्रा में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे उसके लिए मुद्रा की सीमांत उपयोगिता घटती जाती है। फलतः एक गरीब की तुलना में धनी के लिए मुद्रा की सीमांत उपयोगिता कम होती है। यही कारण

(4) विचित्र एवं दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह : Care & curious... पुराने सिक्के एवं डाक टिकट जैसी विचित्र एवं दुर्लभ वस्तुओं को संग्रह करने वाला व्यक्ति ज्यों-ज्यों सिक्कों और टिकटों का प्राप्त करता जाता है त्यों-त्यों प्रत्येक अगले सिक्के व टिकट से मिलने वाली सीमांत उपयोगिता बढ़ती जाती है।

(5) धन संचय की प्रवृत्ति शान शौकत दिखावा :- (Lust for money & Desire for display) → लगातार संचय करते रहने से धन की उपयोगिता घटती नहीं है। इसी प्रकार, शान, शौकत व दिखावे के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों से भी उपयोगिता घटती नहीं है, बल्कि बढ़ जाती है।

(6) वस्तु के उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि :- (Increase in the number of consumers) → टेलीफोन के कनैक्शन के संबंध में यह बात कही जा सकती है। मानाकि किसी शहर में टेलीफोन के कनैक्शनो की संख्या लगातार बढ़ती है तो उतने ही अधिक लोग टेलीफोन का उपयोग करने लगेंगे।

महत्व (Importance) → सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के निम्नलिखित महत्व है :—

(1) उपभोक्ता के आचरण के अध्ययन में सहायता (Consumer behaviour) →

अर्थशास्त्र में सीमांत उपयोगिता ह्रास

इस प्रकार इस नियम के लागू होने के लिए यह आवश्यक है कि उपभोक्ता का फैशन, आदत एवं रुचि समान रहें।

अपवाद (Exceptions)

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के निम्नलिखित अपवाद हैं।—

(1) मधुर संगीत या अच्छी कविता के संबंध में यह नियम लागू नहीं होता।— This law canot impliment in sweet song & good poem) →

मधुर संगीत और अच्छी कविता के संबंध में सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम लागू नहीं होता है क्योंकि ज्यों-ज्यों मधुर संगीत या अच्छी कविता सुनते जाते हैं त्यों-त्यों उसमें हमें अधिक आनन्द प्राप्त होता है। अतः इसकी उपयोगिता घटने के बजाय बढ़ती जाती है।

(2) उपभोग की वस्तु की इकाई बहुत छोटी होने पर यह नियम लागू नहीं होता। The commodity may not be consumed in very small quantity।—

उपभोग की जाने वाली वस्तु की इकाई बहुत छोटी है तो सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम लागू नहीं होता है। इस संबंध में प्रो० चैपमैन ने कहा है कि यदि चाय बनाने वाले व्यक्ति को एक-एक टुकड़ा करके कोयला दिया जाय तो कोयले की सीमांत उपयोगिता घटने के बजाय बढ़ती ही जायेगी।

(3) Drinkards मदिरा पान के संबंध में → मदिरा पान के संबंध में यह नियम लागू नहीं होता है, क्योंकि एक शराबी को शराब के हर अगले गिलास में अधिक आनन्द मिलता है।

लगी और वह लाभप्रति हो जाने तो उस चीज अपनी कानों में स्वीकृत उसका उपभोग कर सकता है। इस प्रकार उसे इस वस्तु से मिलनेवाली सीमांत उपयोगिता घटती हुई न होकर बढ़ती हुई होगी। अतः उपभोक्ता की आय में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

⑦ उपभोक्ता का फैशन, आदत, एवं रुचि समान रहनी चाहिए (Consumer's fashion, habit & taste should remain the same) → यदि उपभोग की अवधि लम्बी हो तो उपभोक्ता के फैशन, आदत एवं रुचि में परिवर्तन नहीं होना चाहिए यदि कोई वस्तु फैशन में नहीं हो तो हम उसकी उपयोगिता का अनुभव नहीं करते। लेकिन वह वस्तु यदि फैशन में आ जाय तो उसके लिए हमारी इच्छा की तीव्रता बढ़ जाती है और वह हमारे लिए अधिक उपयोगी हो जाती है। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति को शराब पीने की आदत नहीं है तो उसके लिए शराब की कुछ भी उपयोगिता नहीं होगी, लेकिन यदि उसे शराब पीने की आदत हो लग जाय तो उसकी उपयोगिता उसके लिए बढ़ जायेगी। पुनः यदि हमें सिनेमा देखने की रुचि न हो तो उसकी उपयोगिता हमारे लिए नहीं के बराबर है, किन्तु हम सिनेमा में रुचि रखने लगे तो उसकी उपयोगिता हमारे लिए बढ़ जायेगी।

Fate leads the willing and drags along the unwilling.

(5) वस्तु तथा उसकी स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत समान रहनी चाहिए (The price of the commodity & its substitutes should be remain same):—

उपभोग की जाने वाली वस्तु एवं उसकी स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए। वस्तु की उपयोगिता उसके रेट के साथ भी जुड़ी रहती है। अतः यदि उपभोग की जाने वाली वस्तु का रेट कम हो जाय तो उसकी माँग एवं उपयोगिता दोनों बढ़ जायेगी। इस लिए स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत में भी परिवर्तन नहीं होना चाहिए। मान लिया जाय कि चाय का रेट स्थिर रहे और कॉफी का रेट बढ़ जाय तो चाय की माँग तथा उपयोगिता में वृद्धि हो जायेगी। अतः इस नियम के कार्य होने के लिए यह जरूरी है कि उपभोग की जाने वाली वस्तु एवं उसकी स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं हो।

(6) उपभोक्ता की आय में परिवर्तन नहीं होना चाहिए (Consumer's income should not be change):—

इस नियम के लागू होने के लिए यह भी आवश्यक है कि उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन न हो। माना लिया कि कोई गरीब व्यक्ति है और वह किसी चीज को अधिक मात्रा में खरीदकर उपभोग करना चाहता है लेकिन पैसे के कमी के कारण वह ऐसा नहीं कर सकता है। अब यदि उस व्यक्ति

इस नियम के लागू होने के लिए यह आवश्यक है कि उपभोग की जाने वाली वस्तु की इकाइयाँ पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए। उदाहरण के लिए एक गिलास पानी प्यास बुझाने के लिए पर्याप्त है, किन्तु यदि किसी प्यासे व्यक्ति को चम्मच पर पानी पिलाया जाए तो पानी की अगले चम्मचों से उसे क्रमशः अधिक सीमांत उपयोगिता प्राप्त होगी। अतः वस्तु की इकाइयों को पर्याप्त मात्रा में रहना आवश्यक है।

(4) वस्तु की सभी इकाइयाँ मात्रा एवं गुण में समान होनी चाहिए। — All units of the commodity should be uniform in quantity & quality. —

उपभोग की जाने वाली वस्तु की सभी इकाइयों को मात्रा एवं गुण में एक समान होना आवश्यक है। मान लिया जाए की किसी व्यक्ति को एक छोटा रसगुल्ला खिलाया जाता है और उसके बाद उसे दूसरा बड़ा रसगुल्ला दिया जाता है ऐसी अवस्था में पहले रसगुल्ले की अपेक्षा दूसरे रसगुल्ले से उसे अधिक सीमांत उपयोगिता प्राप्त होगी। इसी तरह एक व्यक्ति को खट्टा आम खिलाया जाए और बाद में उसे मीठा आम दिया जाए तो खट्टा आम की अपेक्षा मीठा आम में अधिक सीमांत उपयोगिता मिलेगी। अतः इस नियम के लागू होने के लिए वस्तु की सभी इकाइयों की मात्रा एवं गुण में समान होना आवश्यक है।

...nce generally favors the prudent.

यदि हम तीन रोटियाँ को सुबह उपभोग करें और पुनः चौथी रोटी को हमें शाम को उपभोग करना पड़े तो चौथी रोटी की सीमांत उपयोगिता तीसरी रोटी की सीमांत उपयोगिता कम होने के बजाय अधिक हो सकती है। अतः उपभोग की क्रिया लगातार होनी चाहिए।

(2) उपभोक्ता की मानसिक स्थिति में परिवर्तन नहीं होनी चाहिए (There should not be change in the mental condition of the consumer) →

जब उपभोक्ता किसी वस्तु का उपभोग कर रहा हो तो उसकी मानसिक स्थिति में परिवर्तन नहीं होना चाहिए। माना कि कोई उपभोक्ता 10 रसगुल्ले का उपभोग कर अपनी इच्छा की तृप्ति करता है, अतः 11 रसगुल्ले में उपभोक्ता को शून्य के बराबर सीमांत उपयोगिता मिलेगी। लेकिन यदि इसी बीच उपभोक्ता भांग का उपभोग कर ले तो उसकी मानसिक स्थिति बदल जायेगी और वह 25-30 रसगुल्ले का उपभोग कर सकता है। इस प्रकार उसे 11वे रसगुल्ले के बाद में रसगुल्ले के अगली इकाइयों से अधिक सीमांत उपयोगिता प्राप्त होगी। अतः इस नियम के लागू होने के लिए यह आवश्यक है कि उपभोक्ता की मानसिक स्थिति में परिवर्तन न हो।

(3) वस्तु की इकाइयाँ पर्याप्त होनी चाहिए :- (Units of commodity should be adequate) →

उपरोक्त चित्र में X-अक्ष में रोटी की इकाइयों को तथा Y-अक्ष में सीमांत उपयोगिता को दर्शाया गया है MU सीमांत उपयोगिता रेखा है, जो रोटी की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त सीमांत उपयोगिता को बताकर सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम को स्पष्ट करती है। चित्र से स्पष्ट है कि उपभोक्ता को पहली रोटी से 4, दूसरी से 3, तीसरी से 2 तथा चौथी से 1, पाँचवी से 0, छठी से -1, सातवी से -2 उपयोगिता मिलती है।

इस प्रकार चित्र से स्पष्ट पता चलता है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे अधिक रोटियों का उपभोग करता है वैसे-वैसे रोटी की सीमांत उपयोगिता घटती जाती है, और तीन अवस्था को प्राप्त करती है, धनात्मक, शून्य और ऋणात्मक।

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम की मान्यताऐं या सीमाऐं :- (Assumption or Limitation of the Law of Diminishing Marginal Utility) →

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम की निम्नलिखित मान्यताऐं है :-

(1) उपभोग की क्रिया लगातार होनी चाहिए :- (The process of Consumption should be continious) →

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के लागू होने के लिए यह जरूरी है कि उपभोग कि क्रिया लगातार होनी चाहिए। उपभोग की क्रिया लगातार नहीं होने से यह नियम लागू नहीं होगा। मानलिया कि हमें अपनी भूख मिटाने के लिए चार रोटियों की जरूरत है तो इन चारो रोटियों को हमें एक ही समय और लगातार उपभोग करना चाहिए।

पाँचवी रोटी का उपभोग नहीं करना चाहेगा यदि पाँचवी रोटी का उपभोग करेगा तो उपभोक्ता को शून्य के बराबर सीमांत उपयोगिता मिलेगी। और उपभोक्ता छठी और सातवी रोटी का उपभोग करना चाहेगा तो छठी और सातवी रोटी में उपभोक्ता को -1 और -2 (ऋणात्मक) सीमांत उपयोगिता मिलेगी।

नीचे तालिका में उपभोक्ता द्वारा उपभोग की गई सीमांत उपयोगिता को दर्शाया गया है।

रोटी की इकाई	सीमांत उपयोगिता
1	4
2	3
3	2
4	1
5	0
6	-1
7	-2

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे रोटियों का उपभोग करते जाता है वैसे-वैसे रोटी की अगली इकाई से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता घटती जाती है। इसे रेखाचित्र द्वारा भी दर्शाया जा सकता है।—

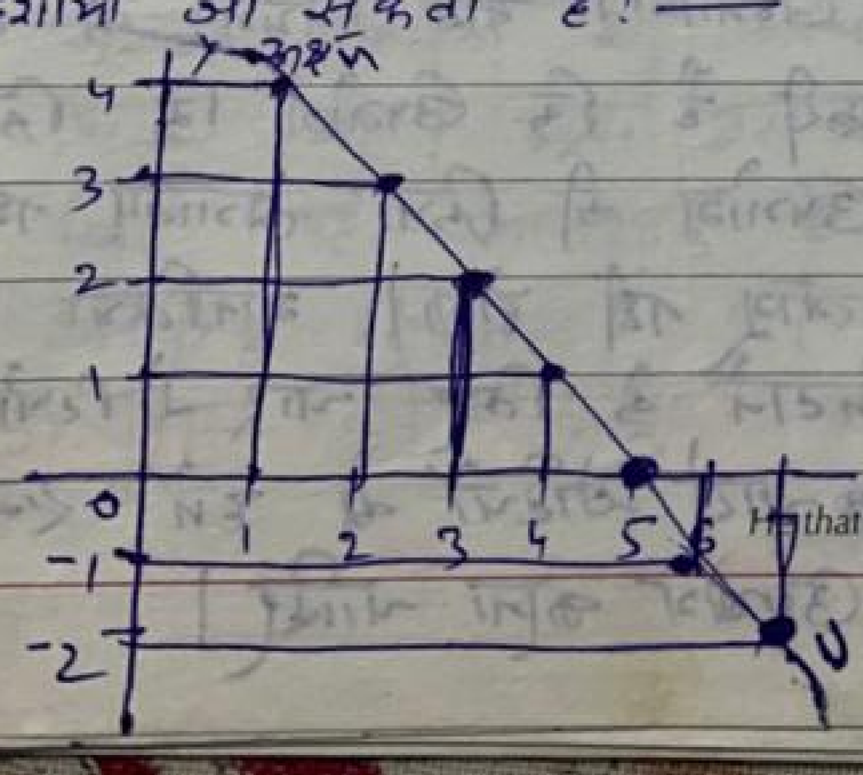

सर्व प्रथम इस नियम का जिक्र 19वीं सदी के मध्य में जर्मनी के सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री गोसेन ने किया था। अतः इस नियम को गोसेन का प्रथम नियम भी कहा जाता है। गोसेन के शब्दों में "जैसे-जैसे हम एक ही और समान संतोष की अधिकाधिक मात्रा प्राप्त करते जाते हैं वैसे-वैसे उसमें तब तक कमी आती जाती है, जब तक पूर्ण संतुष्टि न पहुँच जाए"।

प्रो० मार्शल के अनुसार :- "एक व्यक्ति के पास किसी वस्तु की जो मात्रा होती है उसमें वृद्धि होने से उसे जो अतिरिक्त लाभ होता है वह उस वस्तु की मात्रा में वृद्धि के साथ-साथ कम होता जाता है।

नियम की व्याख्या (Explanation of the Law) :→

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया जाए कि कोई उपभोक्ता अपनी भूख मिटाने के लिए रोटियों का उपभोग करता है, पहली रोटी से उपभोक्ता को 4 इकाई बराबर सीमांत उपयोगिता मिलती है क्योंकि पहली रोटी के उपभोग के बाद उपभोक्ता की भूख की तीव्रता में कुछ कमी होगी। अतः दूसरी रोटी से उपभोक्ता को पहली की तुलना में कम सीमांत उपयोगिता मिलेगी मानाकि दूसरी रोटी से 3 बराबर सीमांत उपयोगिता मिलती है। इसी प्रकार तीसरी, चौथी रोटियों में क्रमशः 2 तथा 1 के बराबर सीमांत उपयोगिता मिलती है। चौथी रोटी के उपभोग के बाद उपभोक्ता की भूख पूर्णतः शांत हो जाती है। अतः उपभोक्ता

highest form of vanity is love of fame.

Sem-I ECO

Dr N.N. Malik

WK 08 • 053-313 **22** FEBRUARY MONDAY 2016

MARCH 2016

M	T	W	T	F	S	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

Q → सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम की व्याख्या करें।

(Explain the Law of Diminishing Marginal Utility.)

or

गोसेन के प्रथम नियम की व्याख्या करें।

Explain the Gosen's first Law.

Ans :— आवश्यकता की एक ~~विशेष~~ प्रमुख विशेषता यह है कि किसी आवश्यकता विशेष की पूर्णरूपेण संतुष्टि की जा सकती है। उपभोग का सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम आवश्यकता की इसी विशेषता पर आधारित है। लेकिन मानव स्वभाव ऐसा है कि किसी आवश्यकता विशेष की संतुष्टि के लिए ज्यों-ज्यों हम किसी वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयों को उपभोग करते हैं, त्यों-त्यों उस वस्तु के लिए हमारी इच्छा में कमी होती है और एक समय ऐसा होता है कि उस वस्तु के प्रति अनिच्छा उत्पन्न होती है। इसका कारण यह है कि जब हम अतिरिक्त इकाईयों का उपभोग करते हैं, तो उनसे हमें कम संतुष्टि मिलती है, और एक समय ऐसा आता है जब हमारी इच्छा पूर्ण रूप से संतुष्ट हो जाती है। आवश्यकता की पूर्ण संतुष्टि हो जाने के बाद उस वस्तु से अनिच्छा हो जाती है, और यह बात प्रायः सभी वस्तुओं में लागू होती है। साधारण बोलचाल की भाषा में इसी सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम कहा जाता है।

05 WK 09 • 065-301
MARCH
2016 SATURDAY

MARCH 2016

M	T	W	T	F	S	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

है कि गरीब की अपेक्षा धनी व्यक्तियों पर अधिक ऊँची दर पर कर लगाया जाता है।

वैसे तो सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम एक सरल एवं सार्वभौमिक नियम है, जिसके कोई वास्तविक अपवाद नहीं है। इस नियम के बारे ऐसा भी कहा जाता है कि यह वस्तु की उपयोगिता का एक मात्र अध्ययन है। क्योंकि एक वस्तु की उपयोगिता दूसरी वस्तु द्वारा भी प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए रोटी की उपयोगिता मक्खन एवं सब्जी की मात्रा पर आधारित होती है।

———— o ———— o ———— o ————

06 SUNDAY
WK 09 • 066-300

उपरोक्त चित्र में X-अक्ष में इकाइयों को और Y-अक्ष में कुल उपयोगिता और सीमांत उपयोगिता के मान को दर्शाया गया है। चित्र में स्पष्ट है कि जब सीमांत उपयोगिता मान पाँचवी इकाई पर सबसे कम शून्य के बराबर है, तब कुल उपयोगिता का मान सर्वाधिक 40 के बराबर है। इसी तरह जब सीमांत उपयोगिता का मान धनात्मक रहता है यानि इकाई 1, 2, 3, 4 तक कुल उपयोगिता का मान ऊपर बढ़ते हुए रहता है जो चित्र में स्पष्ट है, और जब सीमांत उपयोगिता का मान ऋणात्मक रहता है यानि इकाई 6, 7 तक कुल उपयोगिता का मान घटते हुए क्रम में होता है।

इस प्रकार सीमांत उपयोगिता और कुल उपयोगिता के बीच के संबंध दर्शाया गया है।

——— o ——— o ——— o ———

उपरोक्त तालिका के आधार पर TU और MU के बीच के संबंध को स्पष्ट किया जा सकता है। जो निम्नलिखित है:-

(1) जब सीमांत उपयोगिता का मान धनात्मक रहता है तब कुल उपयोगिता का मान बढ़ते हुए क्रम में रहता है।

(2) जब सीमांत उपयोगिता का मान शून्य रहता है तब कुल उपयोगिता का मान अधिक रहता है।

(3) जब सीमांत उपयोगिता का मान ऋणात्मक होता है तब कुल उपयोगिता का मान घटते हुए क्रम में रहता है।

इस परिस्थिति को रेखाचित्र के द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है जो नीचे चित्र में दर्शाया गया है।

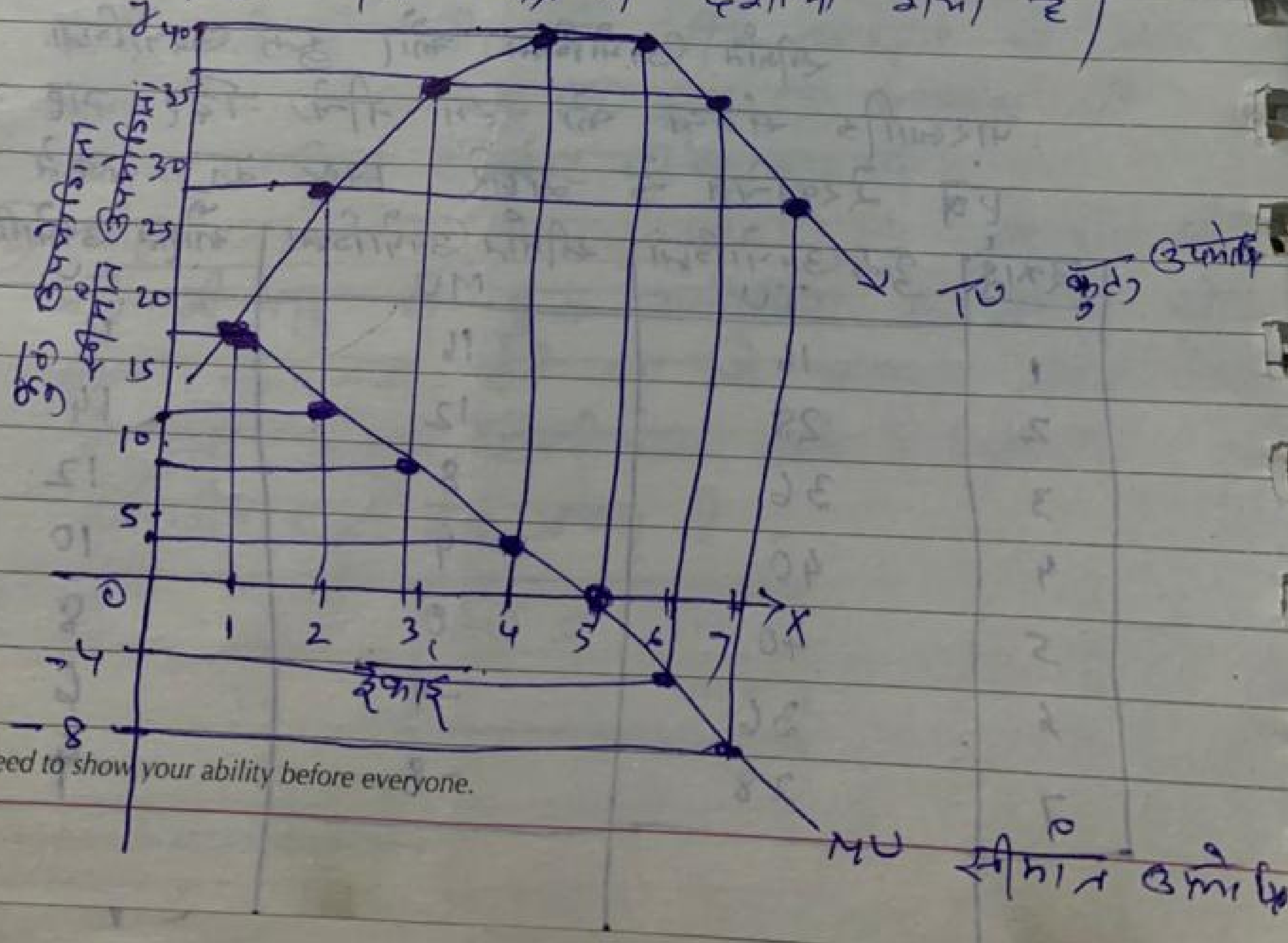

नीचे तालिका से इसकी धारणा को स्पष्ट किया जा सकता है :—

रोटी की इकाई	कुल उपयोगिता	औसत उपयोगिता
1	16	16
2	28	14
3	36	12
4	40	10

इस तालिका से स्पष्ट है कि औसत उपयोगिता धीरे-धीरे घटती जाती है और इसके विपरीत कुल उपयोगिता बढ़ती है।

सीमांत उपयोगिता और कुल उपयोगिता में संबंध
(Relation between Marginal Utility & Total Utility)

सीमांत उपयोगिता और कुल उपयोगिता के पारस्परिक संबंध को हम नीचे दिए गए तालिका एवं रेखाचित्र के सहारे स्पष्ट कर सकते हैं :—

इकाई	कुल उपयोगिता TU	सीमांत उपयोगिता MU	औसत उपयोगिता AU
1	16	16	16
2	28	12	14
3	36	8	12
4	40	4	10
5	40	0	8
6	36	−4	6
7	28	−8	4

नीचे दिए गए तालिका से सीमांत उपयोगिता को और स्पष्ट किया जा सकता है।—

रोटी की इकाई	सीमांत उपयोगिता	
1	16	धनात्मक
2	12	
3	8	
4	4	
5	0	शून्य
6	-4	ऋणात्मक
7	-8	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे उपभोग की जानेवाली वस्तु रोटी की इकाई को बढ़ाता है, रोटी से मिलने वाली सीमांत उपयोगिता घटती जाती है और वह तीन अवस्था को प्राप्त करता है— (1) धनात्मक (2) शून्य (3) ऋणात्मक जो उपरोक्त तालिका में स्पष्ट किया गया है।

(3) **औसत उपयोगिता (Average Utility)** → उपभोग की जानेवाली वस्तु की कुल उपयोगिता को इकाई की संख्या से भाग देने पर जो भागफल प्राप्त होता है उसे औसत उपयोगिता कहते हैं। इसका गणितीय सूत्र इस प्रकार है।-

$$AU = \frac{TU}{Unit}$$

उदाहरण के लिए माना कि उपभोक्ता चार रोटियों का उपभोग करता है और इसे तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता ~~रोटी की इकाई~~ है।—

रोटी की इकाई	रोटी से मिलने वाली ~~सीमांत~~ उपयोगिता	सीमांत उपयोगिता
1	16	16
2	28	12
3	36	8
4	40	4

अब गणितीय सूत्र के द्वारा उपरोक्त तालिका में दर्शाया गया उपभोक्ता का कुल उपयोगिता को ज्ञात किया जा सकता है। हम जानते है कि $TU = \Sigma MU$ होता है। अतः $TU = 16+12+8+4 = 40$ के बराबर कुल उपयोगिता को प्राप्त होती है।

(2) सीमांत उपयोगिता (Marginal Utility) → किसी दिये हुए समय में उपभोग की जानेवाली अंतिम इकाई को सीमांत इकाई तथा उससे प्राप्त उपयोगिता को सीमांत उपयोगिता कहते है।

गणितीय सूत्र से इसे इस प्रकार प्रकट किया जाता है।— $MU = TU_n - TU_{n-1}$

सीमांत उपयोगिता के भी तीन भेद होते है।—

(1) धनात्मक सीमांत उपयोगिता (Positive MU)
(2) शून्य सीमांत उपयोगिता (Zero MU)
(3) ऋणात्मक सीमांत उपयोगिता (Negative MU)

(ङ) उपयोगिता भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के संबंध में ही भिन्न-भिन्न नहीं होती है, बल्कि एक ही व्यक्ति के संबंध में भी भिन्न भिन्न होती है अर्थात उपयोगिता की मात्रा परिवर्तित होती रहती है ऐसे परिवर्तनशील तत्व को माप करना ~~[struck]~~ आसान कार्य नहीं है।

उपरोक्त तर्कों के आधार [Allen, Hicks] Pareto ने स्पष्ट किया है कि उपयोगिता ~~[struck]~~ मापनीय नहीं है। अतः उन्होंने उपयोगिता विश्लेषण के स्थान पर उदासीनता वक्र विश्लेषण की नयी रीति निकाली है। इस विधि के अनुसार उपयोगिता को मापने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इन्हें प्रथम, द्वितीय, तृतीय इत्यादि क्रम वाचक संख्याएँ कहा जाता है। ये संख्याएँ न तो निरपेक्ष अंतर को बताती है और न ही इनको जोड़ा जा सकता है।

उपयोगिता के भेद - (Kinds of Utility) :—

उपयोगिता के निम्नांकित भेद होते हैं।—

(1) कुल उपयोगिता (Total Utility)
(2) सीमांत उपयोगिता (Marginal Utility)
(3) औसत उपयोगिता (Average Utility)

(1) कुल उपयोगिता (Total Utility) → उपभोक्ता द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तु की सभी इकाईयों से प्राप्त उपयोगिता के सम्पूर्ण योग को कुल उपयोगिता कहते है। इससे गणितीय सूत्र $TU = \Sigma MU$ से भी प्रकट करते है।

जोड़ा जा सकता है।

(iii) विभिन्न वस्तुओं से प्राप्त होने वाली उपयोगिता दूसरी वस्तुओं की उपयोगिता पर निर्भर नहीं करती, अर्थात प्रत्येक वस्तु की स्वतंत्र उपयोगिता होती है।

(iv) उपभोक्ता का एकमात्र उद्देश्य अधिकतम उपयोगिता को प्राप्त करना है।

(2) क्रमवाचक दृष्टिकोण (Ordinal Approach) →

आधुनिक अर्थशास्त्री जैसे हिक्स, ऐलन, पेरेटो आदि मार्शल के गणनावाचक दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं। इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार उपयोगिता मापनीय नहीं है। और इन्होंने अपनी इस बात को सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए हैं। —

(1) उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा है। → उपयोगिता का संबंध व्यक्ति विशेष की मनोदशा से है। ऐसी स्थिति में उपयोगिता की माप वस्तुगत तथा व्यक्तिगत पैमाने से नहीं की जा सकती है।

(2) मार्शल ने उपयोगिता को मापने के लिए द्रव्य के पैमाने को स्वीकार किया परन्तु पैमाना प्रामाणिक नहीं है। → क्योंकि इस पैमाने में समय-समय पर परिवर्तन आते रहते हैं, अतः स्थिर पैमाने के अभाव में उपयोगिता का मापना कठिन है।

गणनावाचक दृष्टिकोण से उपयोगिता को दो प्रकार से मापा जा सकता है।—

① मुद्रा के रूप में माप (Measurement in Term of money)

उदाहरण के लिए एक उपभोक्ता एक अंडे के लिए 5 रूपया देता है तो उसके लिए अण्डे की उपयोगिता 5 रुपये के बराबर होगी। अतः हम कह सकते है कि गणनावाचक दृष्टिकोण में उपयोगिता की माप द्रव्य तथा इकाईयों के माध्यम से की जाती है।

② इकाइयों के रूप में माप (Measurement in term of Units) → प्रो फिशर ने उपयोगिता की माप के लिए यूटिल (Util) शब्द का उपयोग किया है। इसके अन्तर्गत उपयोगिता को यूटिल से व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए श्याम को आम के खाने से 10 यूटिल उपयोगिता प्राप्त होती है। जबकि राम को केवल 5 यूटिल। उपयोगिता को उपर्युक्त विधि से जिन संख्याओं में मापा जाता है, 1,2,3,4,5 उन्हें गणनावाचक संख्या कहते हैं।

मान्यताएँ (Assumptions) → गणनावाचक दृष्टिकोण की निम्नलिखित मान्यताएँ है।—

① विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से प्राप्त होने वाली उपयोगिता की माप को द्रव्य की इकाई में मापा जा सकता है।

② विभिन्न वस्तुओं तथा वस्तु की विभिन्न इकाईयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता

क्या उपयोगिता को मापा जा सकता है?
(Can utility be Measured)

उपयोगिता के माप के संबंध में दो विचारधाराएँ प्रचलित हैं।—
(1) गणनावाचक दृष्टिकोण - (Cardinal Approach),
(2) क्रमावाचक दृष्टिकोण (Ordinal Approach)!

(1) गणनावाचक दृष्टिकोण (Cardinal Approach) →

गणनावाचक दृष्टिकोण को मार्शल का गणनावाचक दृष्टिकोण भी कहा जाता है, क्योंकि यह दृष्टिकोण मार्शल द्वारा दिया गया दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण के अनुसार उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक तत्व है, जिसे केवल महसूस किया जाता है। इसका कोई आकार प्रकार नहीं होता। इसको मापने का कोई यंत्र या पैमाना नहीं है। मार्शल के अनुसार उपयोगिता के मापने का दृष्टिकोण गणनावाचक है, क्योंकि इसमें उपयोगिता की गणना की जाती है, जैसे:- 1, 2, 3, 4, 5 आदि। ये संख्यायें बताती हैं कि संख्या 5 संख्या 1 से पाँच गुनी बड़ी है। उपयोगिता को द्रव्य के पैमाने से मापने के संदर्भ में मार्शल ने कहा है कि किसी वस्तु की इकाई के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा उस वस्तु की इकाई के लिए जितना द्रव्य देने की तत्परता रहती है, वही उस वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता का मौद्रिक माप है।

Fortune sides with him who dares.

गर्म कपड़ो की जाड़ों के समय में उपयोगिता है जबकि वही कपड़े उसी उपभोक्ता को गर्मी में कोई उपयोगिता नहीं देंगे।

(4) उपयोगिता का नैतिक सिद्धान्तों से प्रभावित नहीं होती (Moral duties) → यदि किसी व्यक्ति विशेष को किसी सामाजिक कुकृत्य जैसे:- चोरी, डकैती, हत्या बलात्कार आदि कार्यों में उपयोगिता मिलती है तब यह कार्य तथा इन कार्यों में प्रयोग होने वाली वस्तुऐं उस व्यक्ति के लिए उपयोगी है।

(5) उपयोगिता का अर्थ अनुमानित संतुष्टि (Expected Satisfaction) → उपयोगिता का अर्थ अनुमानित संतुष्टि से लिया जाता है न कि वास्तविक संतुष्टि से क्योंकि अनुमानित संतुष्टि उपभोग की तीव्रता पर निर्भर है।

(6) उपयोगिता क्रय की प्रवृत्ति बढ़ाती है (Induces to Buy) उपयोगिता उपभोक्ता के क्रय करने की प्रवृत्ति को बढ़ाती है। उपभोक्ता को जब किसी वस्तु से उपयोगिता मिलती है तभी वह उस वस्तु को क्रय करने के लिए प्रोत्साहित होता है। यदि वस्तुओं में उपयोगिता नहीं होती तो क्रय भी नहीं होता।

(7) उपयोगिता त्याग के बिना असम्भव! → (It Cannot be Acquired without Sacrifice) → प्रकृति द्वारा प्रदत्त वस्तुओं को छोड़कर अन्य सभी वस्तुओं से तब तक उपयोगिता प्राप्त नहीं हो सकती है जब तक कि उनको प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता त्याग न करें।

Sem I Economics
Dr. N.N. Malik

उपयोगिता (Utility)

उपयोगिता का अर्थ (Meaning of Utility) → वे वस्तुएं या सेवाएं जो मानवीय आवश्यकता को संतुष्ट करने की क्षमता होती है उसे ही उपयोगिता कहते है। उदाहरण के लिए वस्त्र द्वारा शरीर ढंकने की आवश्यकता की संतुष्टि होती है, अतः वस्त्र में उपयोगिता है। इसी प्रकार भोजन की आवश्यकता को हम रोटी का उपयोग कर पूरी कर सकते है या बीमार पड़ने पर डॉक्टर की सेवा का उपयोग करते है। इस प्रकार रोटी तथा डॉक्टर की सेवा में उपयोगिता है, क्योंकि इनमें हमारी आवश्यकता को संतुष्ट करने का गुण अथवा क्षमता है।

उपयोगिता की विशेषताएं! (Characteristics of Utility) →

उपयोगिता के निम्नलिखित विशेषताएं है:—

(1) उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा (Psychological Phenomenon)

उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा है उपयोगिता का कम या अधिक होना उपभोक्ता की मानसिक दशा पर निर्भर करता है।

(2) उपयोगिता व्यक्तिपरक (Subjective) → उपयोगिता व्यक्तिपरक होती है, जो विभिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न-भिन्न होती है। एक वस्तु की उपयोगिता सभी व्यक्तियों के लिए एकसमान नहीं होती।

(3) उपयोगिता का विचार सापेक्षिक (Relative) → उपयोगिता का विचार सापेक्षिक है, क्योंकि उपयोगिता समय और स्थान के साथ परिवर्तित होती रहती है। और